International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 12, Issue 4, April 2025
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सीमा हरित (1) एवं प्रो. (डॉ) चंदन सहारण (2)
(1)शोधार्थी, शिक्षा संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
(2) विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

भूमिका

यह शोध अध्ययन जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य संबंध को स्पष्ट करने हेतु किया गया है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ उनके सामाजिक, भावनात्मक एवं शैक्षणिक समायोजन की क्षमता भी उनके समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में यह क्षमता किस सीमा तक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, यही इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के अंतर्गत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन क्षमात के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है, जिसमें जयपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के 100 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया गया है। चयन के लिए डॉ आर.के.ओझा व डॉ.के. रॉय चौधरी के द्वारा निर्मित शाब्दिक बुद्धि परीक्षण तथा प्रो. ऐ.के.पी. सिन्हा और प्रो.आर.पीसिंग के द्वारा निर्मित एडजस्टमैन्ट इन्वैन्टरी का प्रयोग किया गया है। सहसंबंध की गणना के लिए कार्ल पियर्सन विधि का प्रयोग किया गया है। परिणाम में पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सार्थकता के निम्न स्तर (0.05) पर सार्थक व नकारात्मक सहसंबंध है। अर्थात प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के भौक्षिक उपलब्धि में वृद्धि का संबंध निम्न समायोजन क्षमता से है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक संबंध पाया गया। विशेष रूप से भावनात्मक एवं शैक्षणिक समायोजन का प्रभाव अधिक महत्त्वपूर्ण रहा। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रतिभा के साथ यदि विद्यार्थियों में उचित समायोजन क्षमता विकसित हो, तो वे अधिक श्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन कर सकते हैं। यह अध्ययन विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों और अभिभावकों को विद्यार्थियों की समायोजन क्षमताओं पर विशेष ध्यान देने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद के अनुसार –'''*हमें उस शिक्षा कि आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण हो, मस्तिष्क कि शक्ति बड़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके''*

सामान्यतः यहा धारणा थी कि प्रतिभाशाली जन्म से ही होते है, उन्हे बनाया नहीं जा सकता है। अतः इस अध्ययन की आवश्यकता नहीं है, किन्तु धीरे–धीरे धारणा बदलती गई, शोध व अध्ययन का विषय बना – कोई व्यक्ति कैसे और क्यों प्रतिभा संपन्न हो जाता है ? विविध वैज्ञानिकों तथा मनोवैज्ञानिकों ने शोधों व अनुभव

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

के आधार पर माना कि प्रतिभा संपन्न व्यक्ति के व्यवहार में अनियमितता, स्थिरता, के विचित्रता, अस्थाई, कोमलता या कठोरता, अत्यधिक हठ आदि दिखाई पड़ते है उदाहरण – रामकृष्ण परमहंस महाकवि निराला, सुकरात, प्लेटो आदि। विशिष्ट बालकों के वर्गीकरण में प्रतिभा सम्पन्न बालकों का विशेष योगदान होता है। इनसे राष्ट्र को नई पहचान मिलती है, और विश्व में राष्ट्र का मान सम्मान बढ़ता है। इसलिए इनके विकास तथा इनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, पर्याप्त सुविधाओं व उचित ज्ञान के अभाव में प्रतिभावान बालकों के कुसमायोजन से समस्यात्मक बालक बनने की बहुत अधिक सम्भावना रहती है। इस प्रकार से अनेक प्रतिभाएँ नष्ट भी हो जाती है। इस दृश्टि से प्रतिभावान बालकों पर र्प्याप्त ध्यान दिये जाने और उनकी शिक्षा के लिए विशेष प्रबंध करने की आवश्यकता है।

सामान्यतः वैसे बालकों को प्रतिभाशाली बालक कहा जाता है, जिनकी बुद्धि लब्धि सामान्य बालकों से अधिक होती है अर्थात जिनकी बुद्धि लब्धि का मापन 120 से उपर या उसके बराबर होता है। परन्तु आधुनिक विद्वानों तथा वैज्ञानिकों का मत है, कि प्रतिभाशाली बालकों की पहचान मात्र उनकी प्रवीणता तथा बुद्धि के आधार पर नहीं किया जा सकता बल्कि अन्य तथ्यात्मक आधरों को दृष्टिपात करना अनिवार्य है। प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के अध्यापक समुह के विचारों द्वारा, विद्यालयी परीक्षाओं के द्वारा, परिनिष्टि कक्षाओं के द्वारा की जा सकती है।

हैविंग्हसर्ट के अनुसार – ''प्रतिभावान बालक वह है जो कि निरंतर किसी भी कर्मक्षेत्र में अपनी कुशलता तथा प्रवीणता का परिचय देता है। गेट्स व अन्य के अनुसार– ''समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'' समायोजन को शैक्षिक उपलब्धि में प्रेरक घटक माना गया है। शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की प्रगति जानना है अतः यह कहा जाता है कि उपलब्धि किसी विशिष्ट कौशल या ज्ञान के क्षेत्र में किस प्रकार से प्रशिक्षित किया है, और कितना प्राप्त किया है आदि का ज्ञान ही शैक्षिक उपलब्धि है।

त्रिपाठी व पांडे (2016) ने उच्चतर माध्यमिक शालाओं कि सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता उच्च होती है, एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।

भाम्बरी व तिवारी (2006) ने शैक्षिक उपलब्धि व अध्यापन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं शिव कुमार सोनी (2007) ने शैक्षिक उपलब्धि, तिवारी व खान (2007) एवं अग्निहोत्री व गुप्ता (2013) ने शैक्षिण उपलब्धि पर अध्ययन किया कोठारी वघासीलाल (2014) में शैक्षिक समायोजन तथा नेविल (1973) में प्रतिभाशाली बालकों के व्यवहार समस्या का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि प्रतिभाशाली बालकों के बुद्धि लब्धि और समायोजन व संवेगात्क क्षमता के बीच कोई संबंध नहीं होता। भट्ट चंपल के अनुसार– प्रतिभाशाली बालकों में सामान्य बालकों से अधिक समस्या का सामान व उसका उत्तम हल निकालने का गुण होता है। टॉम व नेवेलल के अनुसार – प्रतिभाशाली बालकों के विकास के लिए उत्तम एवं स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। समायोजन क्षमता को शैक्षिक उपलब्धि में प्रेरक घटक माना गया है।

शोध समस्या –

जयपुर जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य संबंध का अध्ययन उच्च माध्यमिक विद्यालय– आशय कक्षा 9वीं के विद्यालयों से है। VIT परीक्षण में चयनित विद्यार्थियों को प्रतिभाशाली विद्यायर्थी माना गया है। शैक्षिक उपलब्धि से आशय कक्षा 9वीं की पूर्व की कक्षा में प्रतिभाशाली विद्यार्थीयों ने शिक्षा के क्षेत्र में कितने प्रतिशत प्राप्त किया है आदि को जानना है। आशय 9वीं में VIT परीक्षण में चयनित विद्यार्थियों के सामाजिक, शैक्षिक, संवेगात्मक, समायोजन संबंधित कार्यो का अध्ययन है।

परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली विद्यार्थी जो 2 शासकीय व 2 अशासकीय विद्यालयों से 100 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक ढंग से किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में समांकों के सचंयन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकत्री ने दो उपकरणों का प्रयोग किया है– प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के पहचान के लिए– शाब्दिक बुद्धि परीक्षण– आर.के.ओझा और के.राय चौधरी का मानकीकृत परीक्षण प्रयोग किया गया हैं। जिसकी विश्वसनीयता split half विधि से 0.87 तथा kuder Richardson सूत्र से 0.91 है। समायोजन मापनी में Adjustment Inventory डॉ.ऐ.के.पी. सिन्हा और डॉ. आर.पी. सिंग का प्रयोग किया गया। जिसकी विश्वसनीयता split half विधि से 0.95 तथा test retest विधि से 0.93 है।

परिणामः

क्र. सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	सहसंबंध गुणांक	व्याख्या
1	शैक्षिक उपलब्धि	100	69.23	–0.21	समर्थक सहसंबंध
2	समयोजन क्षमता	100	14.75		

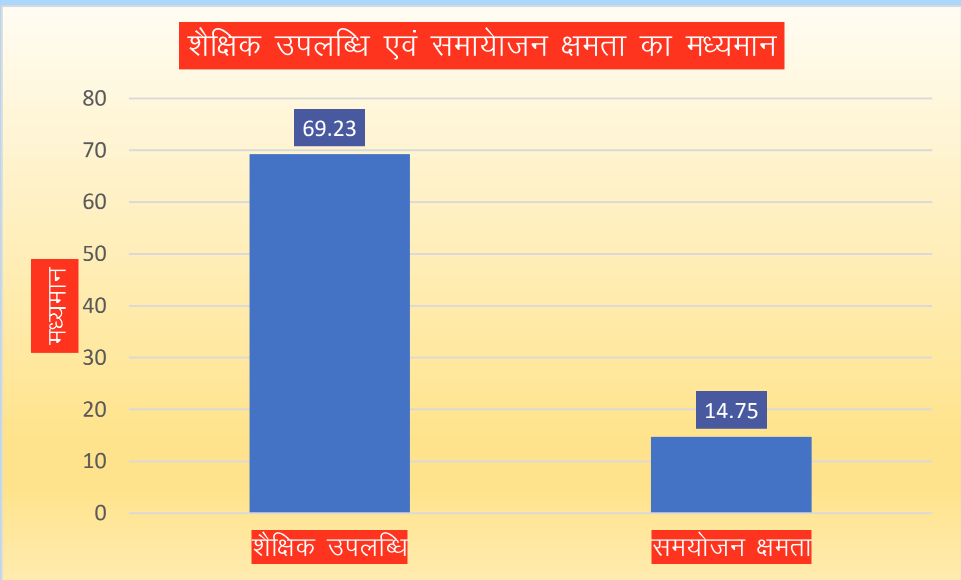

शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता का मध्यमान क्रमशः 69.23 व 14.75 प्राप्त हुआ है तथा दोनों के मध्य सहसंबंध मूल्य –0.21 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के निम्न स्तर (0.05) पर सार्थक है, अतः कहा जा सकता है कि दोनों चरों में नकारात्मक सार्थक सहसंबंध दर्शाता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्षो से यह स्पष्ट होता है कि जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन क्षमता के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध है। अर्थात् जैसे–जैसे इन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे उनकी समायोजन क्षमता में गिरावट देखी जाती है। यह तथ्य इस दिशा में संकेत करता है कि प्रतिभा संपन्न होने के बावजूद यदि कोई विद्यार्थी अपने परिवेशकृ

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

चाहे वह पारिवारिक हो, विद्यालयीन हो अथवा सामाजिककृके साथ समुचित ढंग से समायोजित नहीं हो पा रहा है, तो उसकी मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

इस शोध के विश्लेषण से यह भी समझ में आता है कि शैक्षिक उपलब्धि की प्रतिस्पर्धा में भाग लेते हुए विद्यार्थियों पर निरंतर अच्छे अंक लाने, परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने तथा अभिभावकों और शिक्षकों की अपेक्षाओं पर खरे उतरने का अत्यधिक दबाव रहता है। यह दबाव उनके समायोजन की स्वाभाविक प्रक्रिया को बाधित करता है, जिससे वे भावनात्मक रूप से अस्थिर, सामाजिक रूप से अलग–थलग और व्यवहारिक रूप से तनावग्रस्त हो सकते हैं। उच्च शैक्षिक प्रदर्शन की चाह में वे अक्सर अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सामाजिक जुड़ाव की उपेक्षा करते हैं।

इसके अतिरिक्त, विद्यालयीन वातावरण, शिक्षण–पद्धति तथा पाठ्यक्रम की कठोरता भी विद्यार्थियों के समायोजन में बाधक बन सकती है। प्रतिभाशाली विद्यार्थी अकसर कठोर अनुशासन, एकरूप शिक्षण पद्धति, तथा परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा से ऊब और तनाव का अनुभव करते हैं। यदि शैक्षणिक उपलब्धियों के मूल्यांकन के मानक अत्यधिक संकीर्ण होंगे, तो विद्यार्थियों की रचनात्मकता, आत्म–अभिव्यक्ति तथा समायोजन क्षमता स्वतः ही प्रभावित होगी। ऐसे में शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक अर्जन न होकर व्यक्तित्व विकास भी होना चाहिए।

यह परिणाम हमारे सम्पूर्ण शैक्षिक ढाँचे को पुनर्विचार करने की माँग करता है। जब हम केवल उपलब्धियों पर केन्द्रित हो जाते हैं, तो हम अनजाने में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, उनकी सामाजिक दक्षताओं एवं भावनात्मक बुद्धि की उपेक्षा करने लगते हैं। यदि यह ऋणात्मक संबंध उपेक्षित रहा, तो आगे चलकर यह विद्यार्थी तनाव, अवसाद, सामाजिक अलगाव एवं आत्मविश्वास की कमी जैसे मनोवैज्ञानिक संकटों का शिकार हो सकते हैं, जो न केवल उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करेगा, बल्कि समाज की समग्र प्रगति में भी बाधा उत्पन्न करेगा। अतः यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा–नीति, विद्यालयीन व्यवस्था और शिक्षण–पद्धति इस बात को प्राथमिकता दें कि विद्यार्थियों को केवल ज्ञान अर्जन का साधन न समझा जाए, बल्कि उन्हें एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा जाए। पाठ्यक्रम में समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य, जीवन कौशल, तनाव प्रबंधन एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधित गतिविधियाँ शामिल की जानी चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाना होगा तथा अभिभावकों को भी यह समझने की आवश्यकता है कि हर उपलब्धि की कीमत मानसिक संतुलन नहीं होनी चाहिए। तभी हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकेंगे जो न केवल अकादमिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक रूप से भी सशक्त हो।

संदर्भ

- त्रिपाठी व खान (2007). छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की जवाबदेही एवं शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन। ***Research Digest vol-2,issue-2october-decmber2007,***izdk"ku***E-22 Parijal Extension.***
- भाम्बरी व तिवारी (2006). सी.बी .एस.ई एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयें में अध्ययनरत् छात्रो की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। ***Research Digest vol-1, issue-1, july-sept 2006,*** izdk"ku ***E-22 Parijal Extension.***
- तिवारी व सोनी (2007). शिक्षाकर्मी वर्ग –03 एवं सहायक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के संदर्भ में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''***Research Digest vol-3.4, october-decmber2008,*** प्रकाशन ***E-22 Parijal Extention.***
- त्रिपाठी व पाण्डेय (2016). उच्चतर माध्यमिक शालाओं की सामाजिक – आर्थिक स्तर की उनकी समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन। ***Research Digest vol-11, issue-112April -june 2016 , 2July –Sept2016.***
- कोठारी व लोधा (2014). शैक्षिक समायोजन और विद्यालय के प्रकारों का पारस्परिक संबंध। ''प्रौढ़ शिक्षा अंक –1, वर्ष –58, जनवरी–मार्च 2014, प्रकाशन–भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ।